हिन्दी साहित्य

HINDI LITERATURE

टेस्ट-VII (प्रश्नपत्र-2)

DTVF/18(JS)-HL-**HL7**

निर्धारित समय: तीन घंटे *Time allowed: Three Hours*	अधिकतम अंक: 250 *Maximum Marks: 250*

नाम (Name): Devendra Prakash Meena

क्या आप इस बार मुख्य परीक्षा दे रहे हैं? | हाँ | ✓ | नहीं | |

मोबाइल नं. (Mobile No.): _____

ई-मेल पता (E-mail address): _____

टेस्ट नं. एवं दिनांक (Test No. & Date): 7 5 21/08/18

रोल नं. [यू.पी.एस.सी. (प्रा.) परीक्षा-2018] [Roll.No. UPSC (Pre) Exam-2018]:

1	1	1	3	4	4	8

विद्यार्थी के हस्ताक्षर (Student's Signature): Dmeena

Question Paper Specific Instructions

Please read each of the following instruction carefully before attempting questions:

*There are **EIGHT** questions divided in **TWO SECTIONS.***

*Candidate has to attempt **FIVE** questions in all.*

*Questions no. 1 and 5 are compulsory and out of the remaining, any **THREE** are to be attempted choosing at least **ONE** question from each section.*

The number of marks carried by a question/part is indicated against it.

*Answer must be written in **HINDI** (Devanagari Script).*

Answers must be written in the medium authorized in the Admission Certificate which must be stated clearly

Word limit in questions, wherever specified, should be adhered to.

Attempts of questions shall be counted in sequential order. Unless struck off, attempt of a question shall be counted even if attempted partly. Any page or portion of the page left blank in the Question-cum-Answer Booklet must be clearly struck off.

कुल प्राप्तांक (Total Marks Obtained): _____ टिप्पणी (Remarks): _____

मूल्यांकनकर्त्ता (कोड तथा हस्ताक्षर)
Evaluator (Code & Signatures)

पुनरीक्षणकर्त्ता (कोड तथा हस्ताक्षर)
Reviewer (Code & Signatures)

मूल्यांकन की पद्धति

प्रिय अभ्यर्थियों,

आपकी उत्तर-पुस्तिकाओं का मूल्यांकन करते हुए परीक्षक-समूह के सदस्य निम्नलिखित निर्देशों का ध्यान रखते हैं। आप भी इन्हें ध्यान से पढ़ें ताकि आप अपने प्राप्तांकों का तार्किक कारण समझ सकें।

परीक्षकों के लिये निर्देश

1. मूल्यांकन में अंकों का वही स्तर रखा जाना चाहिये जैसा संघ लोक सेवा आयोग (UPSC) के परीक्षकों द्वारा रखा जाता है।
2. सामान्य अध्ययन का जो उत्तर हर दृष्टिकोण से सटीक व उत्कृष्ट है; उसे अधिकतम 60% अंक दिये जाने चाहियें क्योंकि आयोग द्वारा किये जाने वाले मूल्यांकन में भी इससे अधिक अंक मिलना लगभग असंभव है। वैकल्पिक विषयों के उत्कृष्ट उत्तरों तथा श्रेष्ठतम निबंधों में अधिकतम 70% तक अंक दिये जा सकते हैं।
3. कृपया अंकों का वितरण निम्नलिखित तालिका के अनुसार करें-

उत्तर का स्तर (Standards of Answer)	सामान्य अध्ययन में अंक-स्तर (Marks Standard G.S.)	वैकल्पिक विषय तथा निबंध में अंक-स्तर (Marks Standard - Optional Subject and Essay)
उत्कृष्ट (Excellent)	51-60%	61-70%
बहुत अच्छा (Very Good)	41-50%	51-60%
अच्छा (Good)	31-40%	41-50%
औसत (Average)	21-30%	31-40%
कमज़ोर (Poor)	0-20%	0-30%

4. कृपया उत्तर में निम्नलिखित गुणों को विशेष प्रोत्साहन दें-
   - प्रश्न की सटीक समझ व उत्तर की व्यवस्थित रूपरेखा
   - संक्षिप्त, टू-द-पॉइंट लेखन शैली
   - प्रामाणिक तथ्यों का समुचित उपयोग
   - अधिकतम ज़रूरी बिंदुओं का समावेश
   - सरकारी दस्तावेज़ों (मंत्रालयों/आयोगों की रिपोर्ट्स, पॉलिसी पेपर्स आदि) के संदर्भों की चर्चा
   - प्रभावी भूमिका व निष्कर्ष
   - समकालीन घटनाओं/प्रसंगों को उत्तर से जोड़ना
   - दृष्टिकोण में संतुलन, समावेशन व गहराई
   - अच्छी, साफ-सुथरी हैंडराइटिंग
   - भाषा में प्रवाह
   - आवश्यकतानुसार डायग्राम्स, नक्शों आदि का प्रयोग
   - तकनीकी शब्दावली का सटीक उपयोग
   - सुंदर प्रस्तुति शैली (छोटे पैराग्राफ्स रखना, महत्त्वपूर्ण शब्दों को अंडरलाइन करना आदि)
   - विराम चिह्नों का समुचित प्रयोग
   - भाषा में वर्तनी व व्याकरण की शुद्धता
5. टॉपर्स के अनुभव बताते हैं कि उत्तर की विषयवस्तु अच्छी होने पर आयोग के परीक्षक शब्द-सीमा के थोड़े बहुत उल्लंघन पर अंक नहीं काटते हैं। कृपया आप भी इसी दृष्टिकोण के अनुसार अंक-निर्धारण करें।

Method of Evaluation

Dear Candidates,

While assessing your answer-scripts, the evaluators are required to follow the given instructions. You should also read them carefully to understand the logic behind the marks obtained by you in the tests.

Instructions for the Evaluators

1. The level of marks while evaluating the answers should be kept as per UPSC (Union Public Service Commission) standards as far as possible.
2. The answers of General Studies which are accurate and excellent from every perspective should be awarded a maximum of 60% marks as it is almost impossible to get more than that in actual UPSC examination. Excellent answers in optional subjects and the best written essays can be awarded a maximum of 70% marks.
3. Please assign the marks according to the following table-

4. Please devote special attention to the following qualities in an answer–
   - Accurate understanding of the question and systematic presentation of the answer
   - Crisp and to the point writing style
   - Adequate use of authentic facts
   - Inclusion of all the important points
   - Citing of relevant facts and figures from relevant official documents (Ministries /Commissions Reports, Policy Papers etc.)
   - Effective introduction and conclusion
   - Linking of current events and situations with the answer
   - Balance and depth in answer-writing
   - Legible and clean handwriting
   - Flow of language
   - Use of diagrams, maps etc
   - Precise use of technical terminology
   - Beautiful presentation style (small paragraphs, underlining important words etc.)
   - Proper use of punctuations
   - Correct spellings and right use of grammar
5. Experience of UPSC toppers also indicates that if the content of the answer is good, the UPSC examiners do not cut the marks on slight violations of the word-limit. Please award marks strictly according to the above-mentioned instructions.

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Section–A

1. निम्नलिखित काव्यांशों की संदर्भ-सहित व्याख्या (लगभग 150 शब्दों में) प्रस्तुत करते हुए उनके काव्य-सौंदर्य का परिचय दीजिये: $10 \times 5 = 50$

(क) नैनाँ अंतरि आचरूँ, निस दिन निरषौं तोहिं।
कब हरि दरसन देहुगे, सा दिन आवै मोंहि।।

संदर्भ - प्रस्तुत पद्यांश भक्तिकाल के प्रमुख कवि कबीर की वाणियों के संकलन 'कबीर ग्रंथावली' (श्याम सुन्दर दास) से अवतरित है।

'विरह कौ अंग' में कबीर ने जीवात्मा के परमात्मा से नहीं मिल पाने के विरह को प्रकट किया है।

व्याख्या - कबीर दास कहते हैं कि जीवात्मा परमात्मा से मिलने के लिए दिन रात बेचैन रहती है आँखों में पीड़ा बस गई है। ~~है~~ ~~म~~ जीवात्मा कहती है वह दिन कब आयेगा जब उसका विरह समाप्त करने हरि दर्शन देंगे।

विशेष -

① विरह को दर्शाने के लिए कबीर ने ~~जीवात्मा~~ ~~लक्ष~~ ~~के~~ ~~संदर्भ~~ ~~में~~ अन्यत्र भी कहा है -

" अंखड़िया झाईं पड़ी, पंथ निहारी- निहारी
जिहड़िया छाला पड़्या, राम पुकारि- पुकारि।"

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

② कबीर के यहाँ विरह निर्गुण ईश्वर से न मिल पाने के लिए है जबकि सूर के द्वारा गोपियों का विरह वर्णन सगुण ईश्वर से न मिल पाने के संदर्भ में है।

③ कबीर के यहाँ वर्णित विरह पदमावत में वर्णित नागमती के विरह के समान उच्च स्तरीय है

④ कबीर की भाषा सधुक्कड़ी है। इस भाषा के संदर्भ में द्विवेदी जी ने कबीर को वाणी का डिक्टेटर कहा है।

⑤ अनुप्रास अलंकार का प्रयोग है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ख) फागुन पवन झकोरा बहा। चौगुन सीउ जाइ नहिं सहा।।
तन जस पियर पात भा मोरा। तेहि पर बिरह देइ झकझोरा।।
तरिवर झरहि झरहि बन ढाखा। भइ ओनंत फूलि फरि साखा।
करहिं बनसपति हिये हुलासू। सो कहँ भा जग दून उदासू।।
फागु करहिं सब चाँचरि जोरी। मोहि तन लाइ दीन्ह जस होरी।।
जौ पै पीउ जरत अस पावा। जरत-मरत मोहि रोष न आवा।।
राति-दिवस बस यह जिउ मोरे। लगौं निहोर कंत अब तोरे।।
यह तन जारौं छार कै, कहौं कि 'पवन! उड़ाव'।
मकु तेहि मारग उड़ि परै, कंत धरै जहँ पाव।।

संदर्भ - प्रस्तुत पद्यांश अवधी के प्रधान जायसी कृत पद्मावत के नागमती वियोग खंड से लिया गया है।

इन पंक्तियों में जायसी ने नागमती के विरह का बारहमासा वर्णन किया है।

व्याख्या :- जायसी नागमती के विरह का वर्णन करते हुये कहते हैं कि फाल्गुन के महीने में हवा ~~झक~~ तेजी से बह रही है जिससे ठंडी चार गुना बढ़ गई है। नागमती कहती है कि जिस प्रकार पत्ते पीले होकर गिर जाते है उसी तरह विरह उसके तन को झकझौर रहा है।

पत्ते झड़ने के पश्चात् फूल खिल गये है जिससे ऐसा प्रतीत होता है कि वनस्पति उल्लास प्रकट कर रही है किन्तु मुझे यह संसार उदासी प्रदान कर रहा है। फाग के गीत ~~ख~~ गाये जा रहे है किन्तु

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

मेरा तन होली की भाँति जल रहा है। मेरा हृदय विरह में जलता है किन्तु मुझे गुस्सा नहीं आता। मेरे हृदय को दिन रात आपसे मिलने की प्रतीक्षा रहती है।

नागमती कहती है कि वह यह तन जलाकर राख कर देगी तथा उस राख से कहेगी कि पति के मार्ग में वहाँ बिछ जाये जहाँ प्रियतम पाँव रखे ताकि उन्हें तकलीफ नहीं हो।।

विशेष

① नागमती के विरह वर्णन को जायसी ने अन्यत्र भी प्रकट किया है-

"जेठ जरै जग बहै लुवारा। उठ बवंडर धिकै पहारा,
उहिं पवन झकौरे आगि, लंका दाहि पलंका लागि।"

② नागमती के विरह मे जिस प्रकार प्रकृति उद्दीपन विभाव बनकर प्रस्तुत हुई है, उसी तरह सूर की गोपियों के यहाँ भी यह दिखाई देता है-

~~" बैरिन भई बसन्त की फूलैं~~
" निसि दिन बरसत नैन हमारे,
सदा रहती पावस ऋतु हमपे, जब ते स्याम सिधारे।"

③ ~~श~~ जायसी की भाषा ठेठ अवधी भाषा है, जिसकी मिठास के संदर्भ में शुक्ल जी ने प्रशंसा करते हुए इसे ~~की~~ माधुर्य भाषा की मिठास कहा।

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ग) अपनो स्वारथ को सब कोऊ।
चुप करि रहौ, मधुप रस-लंपट, तुम देखे अरु वोऊ।।
औरो कछू संदेस कहन को कहि पठयो किन सोऊ।
लीन्हें फिरत जोग जुवतिन को बड़े सयाने दोऊ।।
तब कत मोहन रास खिलाई जो पै ज्ञान हुतोऊ?
अब हमरे जिय बैठो यह पद होनी 'होउ सो होऊ'।।
मिटि गयो मान परेखो ऊधो हिरदय हतो सो जोऊ।
सूरदास प्रभु गोकुलनायक चित-चिंता अब खोऊ।।

संदर्भ - प्रस्तुत पद्य पंक्तियाँ कृष्ण भक्ति काव्यधारा के शिखर कवि सूरदास के पदों के संकलन भ्रमरगीतसार (आचार्य शुक्ल) से ली गई है।

इन पंक्तियों में गोपियां उद्धव को योगमार्ग को नीरस बताते हुये अपना तर्क प्रस्तुत करती है।

व्याख्या :- गोपियां कहती है कि अपना हित सभी देखते है। तुम चुप रहो हे मधुकर अर्थात् उद्धव, तुम्हे कुछ और संदेश नहीं दिया श्रीकृष्ण ने जो तुम यह योग तथा ज्ञानमार्ग का उपदेश दिये फिरते हो। युवतियों को योग सिखाकर तुम बड़े ज्ञानवान समझ रहे हो।

हम तो मोहन की छवि का पान करती है और वो छवि हमारे हृदय में बैठ गई है जिससे तुम्हारा यह ज्ञानमार्ग हमारी समझ से

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

पड़े हैं। ~~हमारे हृदय में जो~~ हमारे प्रभु को हृदय में धारण करने से सारा घमंड समाप्त हो जाता है। वे तो गोकुल के रक्षक हैं और हमारी चिंताएं भी नष्ट हो गई है।

विशेष :

① गोपियाँ अन्यत्र भी उद्धव को योगमार्ग को नीरस बताते हुये कहती है-

" आयो घोष बड़ो व्यापारी,
लादि खेप गुन ज्ञान जोग की, ब्रज में आन उतारी।"

② योगमार्ग को नीरस बताने वाले अन्य भक्त कवियों में कबीर व तुलसी भी हैं।

" गगना पवना दोनो बिनसे, कहा गया जोग तुम्हारा।
(कबीर)

" गोरख जगायो जोग, भगति भगायो लोग।
(तुलसी)

③ सूरदास की भाषा ब्रजभाषा है जिसके संदर्भ में शुक्ल जी ने कहा कि- यह एक चलती हुई भाषा का पूर्ण विकास जान पड़ता है।

④ उत्प्रेक्षा अलंकार का प्रयोग है।

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(घ) नीकी दई अनाकनी, फीकी परी गुहारि।
तज्यौ मनौ तारन-बिरदु बारक बारनु तारि।।

संदर्भ - प्रस्तुत दोहा रीतिकालीन सर्वश्रेष्ठ कवि बिहारीदास के दोहो के संकलन 'बिहारी रत्नाकर' (जगन्नाथ रत्नाकर) से लिया गया है।

इस दोहे मे बिहारी ईश्वर को उन्हे भवसागर नहीं तारने का आक्षेप लगाते है।

व्याख्या - बिहारी दास कहते है कि हे ईश्वर आप अच्छी आनाकानी कर रहे हो, मैं इतनी गुहार कर रहा हूँ किन्तु वो सब फीकी पड़ गई है। ऐसा लगता है कि हाथी को तारकर ~~आपने~~ अपनी ~~तारन~~ तारनहार की उपाधि भुला दी है।

विशेष -

① बिहारी मूलतः शृंगारिक कवि है किन्तु यह दोहा उनकी मूल प्रवृत्ति के विपरीत है। वे बिहारी सतसई के मंगलाचरण में भी भक्ति का दोहा लिखते है -

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

"मेरी भवबाधा हरौ, राधा नागरि सोई,
जा तन की झाई परत, श्याम हरित द्युति होई।"

② यहाँ वैष्णव परम्परा की भाँति नवधा भक्ति की बजाय कबीर की भक्ति का अधिक प्रभाव है जहाँ वे भी कहते है कि यह तन समाप्त होने के बाद दर्शन देना व्यर्थ होगा।

③ बिहारी की भाषा ब्रज भाषा है। उन्होंने ब्रजभाषा का प्रयोग करते हुये अपने दोहो को इतनी गहराई प्रदान की कि जार्ज ग्रियर्सन ने भी उनकी तुलना यूरोप के सर्वश्रेष्ठ कवियों से की।

④ अनुप्रास अलंकार का प्रयोग है।

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ङ) जिन श्रेष्ठ सौधों में सुगायक श्रुति-सुधा थे घोलते,
निशि-मध्य, टीलों पर उन्हीं के आज उल्लू बोलते!
"सोते रहो हे हिन्दुओ! हम मौज करते हैं यहाँ,"
प्राचीन चिह्न विनष्ट यों किस जाति के होंगे कहाँ?

संदर्भ - प्रस्तुत पद्यावतरण नवजागरण चेतना के प्रतीक मैथिलीशरण गुप्त की कविता 'भारत-भारती' से लिया गया है।

इन पंक्तियों में कवि भारत की वर्तमान दुर्दशा का चित्रण प्रस्तुत करते है।

व्याख्या - गुप्त जी भारत की प्राचीन भव्यता का वर्णन करते हुये कहते है कि जिन महलों में महान कवि अपनी वाणी का रस घोलते थे वहाँ अब दुर्दशा के कारण रात्रि में उल्लू बोलते है।

आगे कवि हिन्दुओं को निर्दिष्ट करते हुये कहते है कि तुम्हारी प्राचीन श्रेष्ठता के चिन्ह नष्ट हो रहे है, कब तक सोते रहोगे अर्थात् अज्ञानता में रहकर इन्हे नष्ट होने दोगे।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

विशेष :-

① उक्त पंक्तियाँ में नवजागरण चेतना के तत्व आत्म गौरव व आत्म आलोचना को दर्शाया गया है।

② गुप्त जी भी भारतेन्दु की भाँति नवजागरण चेतना के अन्तर्गत आत्मगौरव प्रस्तुत करते हैं-

"सबके पहिले जेहि ईश्वर धन बल दीनो।"
(भारतेन्दु)

"संसार को पहले हमीं ने ज्ञान शिक्षा दान की।"

③ यहाँ गुप्त जी हिन्दू केन्द्रित राष्ट्रीयता का अवलोकन किया जा सकता है। यह हिन्दू-केन्द्रित राष्ट्रीयता भारतेन्दु काल में भी उपस्थित थी, जब भारतेन्दु कहते हैं- हिन्दी, हिन्दू- हिन्दुस्तान

④ भाषा - खड़ी बोली

⑤ इतिवृत्तात्मक शैली में कविता लिखी गई है। अतः प्रसाद गुण से युक्त है।

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

2. (क) दिनकर का मानवतावादी दर्शन कुरुक्षेत्र में किस रूप में अभिव्यक्त हुआ है? प्रकाश डालिये। 20

दिनकर की कविता कुरुक्षेत्र में अर्जुन के प्रश्नों के उत्तर देते हुये भीष्म ने मानवतावादी दर्शन को प्रस्तुत किया है।

वस्तुत मानवतावादी दर्शन के अन्तर्गत इहलोकवाद पर बल दिया जाता है। मानवतावादी परलोक को भ्रम मानकर उसे मिथ्या कहता है, जिस प्रकार यशपाल ने मारिशा के माध्यम से परलोक का खंडन किया है। भीष्म भी कहते है -

"ऊपर सबकुछ शून्य - शून्य है, कुछ भी नहीं गगन में,
जो कुछ भी है धर्मराज। इस मिट्टी में, जीवन में।"

मानववादी दर्शन मानव के आत्मविश्वास को ही सर्वप्रमुख मानता है। मार्क्सवाद में इसे प्रैक्सिस की अवधारणा कहा जाता है। 'दिव्या' में जिसतरह मनुष्य को कर्ता के रूप में प्रस्तुत किया है यहाँ भी वह इसी रूप में

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

व्यक्त किया गया है।

मानववादी दर्शन की एक मूल विशेषता ~~स्त्री~~ वर्ग समता तथा अधिकार समता होती है। भील भी युद्ध कारण अधिकारों की असमानता ही मानते है। इसी संदर्भ में वे अर्जुन से कहते है

" जब तक मनुज मनुज का,
यह सुख भाग नहीं सम होगा,
शमित न होगा कोलाहल,
संघर्ष नहीं कम होगा।"

दिनकर ने विज्ञान के महत्व को दर्शाते हुये कहा कि मानव ने विज्ञान का प्रयोग अपने विकास की बजाय विनाश के साधनों के आविष्कार में किया है। इसी पीड़ा को व्यक्त करते हुये भील कहते है-

" सावधान मनुष्य यदि विज्ञान है तलवार,
तो फेंक दे इसे तजकर मोह स्मृति के पार।"

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

इस प्रकार स्पष्ट है कि दिनकर ने कुरुक्षेत्र में मानवतावादी दर्शन को प्रस्तुत करते हुये वर्तमान संदर्भों के अनुरूप उसे अपनाने की सलाह भी दी है।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ख) नागमती के विरह-वर्णन को मध्यकालीन नारी की दासता का चित्रण कहना कहाँ तक उचित है? अपना मत प्रस्तुत कीजिये। 15

जायसी द्वारा प्रस्तुत नागमती के विरह को शुक्ल जी ने हिन्दी साहित्य की अद्वितीय वस्तु कहा है क्योंकि यह समाज निरपेक्ष न होकर समाज- ~~विर~~ सापेक्ष है।

किन्तु कुछ समीक्षकों ने इसे मध्यकालीन नारी की दासता माना है। उनका तर्क है कि जिस तरह मध्यकाल में कबीर (नारी की झाँई परत अंधा होत भुजंग) तथा तुलसी (नारी हानि विशेष क्षति नाही) नारी के संदर्भ में नकारात्मक लिख रहे थे।

उसी तरह जायसी ने नागमती का विरह वर्णन भी मध्यकालीन नारी की हीन दशा को प्रस्तुत करने के लिए किया। निम्नलिखित आधारों पर जायसी द्वारा वर्णित विरह को मध्यकालीन नारी की दासता का चित्रण माना -

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

नागमती का विरह अपने पियतम के लिए उस स्तर का है कि वह कहती है -

" यह तन जारौं छार कै, कहौं कि पवन उडाव,
मकु तेहि मारग उडि परै, कंत धरै जहँ पाव।"

किन्तु उसके पियतम रत्नसेन को उसके प्रति कोई विरह नहीं है।

② नागमती का विरह केवल पियतम से बिछुड़ने के कारण ही नहीं है बल्कि पियतम के कारण मिलने वाले सम्मान तथा सुरक्षा के खो जाने के कारण भी है। वह कहती है -

" पुहुप नखत सिर ऊपर आवौं,
हौं बिनु नाह मंदिर को छावा।"

" मोहि पिय बिनु को आदर देई।"

③ नागमती का विरह वर्णन तत्कालीन समाज की पितृसत्तात्मक सोच को भी दर्शाता है। राजा - सामन्त कितनी भी पत्नियाँ रख सकते थे जबकि स्त्री को सम्पत्ति में अपनी

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

सपत्नी को स्वीकार करना पड़ता था।

इस प्रकार स्पष्ट है कि नागमती का विरह मध्यकालीन नारी की दासता को दर्शाता है, जो पितृसत्ता के लिए जागरूकता करने के लिए कहती है किन्तु उसका पितृसत्ता उससे प्रेम नहीं करता।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) बिहारी की समाहार-शक्ति का उद्घाटन कीजिये।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

बिहारी रीतिकालीन सर्वश्रेष्ठ कवि है, जिन्होंने भावों की समाहार क्षमता तथा भाषा की समास क्षमता के माध्यम से अपने दोहों को गागर में सागर बना दिया।

बिहारी की समाहार क्षमता का प्रमुख कारण तत्कालीन सामन्ती परिवेश था। दरबार में विभाव पक्ष की अनुपस्थिति के कारण केवल अनुभाव पक्ष पर बल दिया जाता था, जिसके कारण बिहारी के दोहे अनुभावों की सघनता से युक्त है-

"कहत, नटत, रीझत, खिजत,
मिलत, खिलत, लजियात,
भरे भौन में करत है
नैननु ही सौ बात।"

बिहारी की समाहार क्षमता का एक प्रमुख कारण दोहे जैसे छोटे छंद का

Copyright © Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

चुनाव करना था। वे दोहे जैसे छंद में अपनी बिम्ब क्षमता का अद्भुत प्रदर्शन करते हुये ऐसे प्रस्तुत करते हैं, मानों कविता आखों में तैर गयी हो।

बिहारी की एक कविता को सुनना, एक चलचित्र देखने के समान होता है -

" बतरस लालच लाल की,
मुरली धरी लुकाय,
सौंह करे, भौंहनु हँसे,
दैन कहे, नट जाय।"

~~कविता~~ अपने दोहों की इस अद्भुत समाहार क्षमता के कारण ही जार्ज ग्रियर्सन ने बिहारी को सर्वश्रेष्ठ कवि बताया।

बिहारी के दोहे की समाहार क्षमता उनकी बिहारी सतसई को भी गागर में सागर का रूप प्रदान करती है, इसी संदर्भ में एक कवि ने लिखा है -

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

"सतसईया के दोहरे, जैसे नाविक के तीर।
देखन में छोटे लगे, घाव करें गंभीर।"

बिहारी ने अपनी समाहार क्षमता का प्रदर्शन करते हुये नायिका की शृंगार तुलना अनेक उपमानों से की है।

सारांशतः कहा जा सकता है कि बिहारी अपनी बहुज्ञता के कारण समाहार क्षमता से युक्त है।

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Section–B

5. निम्नलिखित गद्यांशों की संदर्भ-सहित व्याख्या (लगभग 150 शब्दों में) करते हुए उसके रचनात्मक-सौंदर्य का परिचय दीजिये: $10 \times 5 = 50$

(क) श्रद्धा और प्रेम के योग का नाम भक्ति है। जब पूज्यभाव की वृद्धि के साथ श्रद्धाभाजन के सामीप्य-लाभ की प्रवृत्ति हो, उसकी सत्ता के कई रूपों के साक्षात्कार की वासना हो, तब हृदय में भक्ति का प्रादुर्भाव समझना चाहिये। जब श्रद्धेय के दर्शन, श्रवण, कीर्तन, ध्यान आदि से आनन्द का अनुभव होने लगे–जब उससे सम्बन्ध रखने वाले श्रद्धा के विषयों के अतिरिक्त बातों की ओर भी मन आकर्षित होने लगे, तब भक्ति रस का संचार समझना चाहिये।

संदर्भ - प्रस्तुत गद्यावतरण हिन्दी निबंध परम्परा के श्रेष्ठतम लेखक आचार्य शुक्ल के निबंध श्रद्धा-भक्ति से लिया गया है।

इन पंक्तियों में वे श्रद्धा तथा भक्ति जैसे मनोविकारों का विश्लेषण प्रस्तुत करते है।

व्याख्या - शुक्ल जी भक्ति की व्याख्या करते हुये उसे श्रद्धा तथा प्रेम के समन्वय के रूप में परिभाषित करते है। वे कहते है कि जब हृदय में प्रेम के तत्व सामीप्य प्राप्ति तथा श्रद्धा के तत्व श्रद्धा भाव का आधिक्य होता है, तब भक्ति का विकास होता है।

~~उनके~~ वे श्रद्धा के तत्वों का आधिक्य होने से जब प्रेम के दर्शनों की, उसके

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

ध्यान की अनुभूति में आनन्द मिलने लगे तो भक्ति रस का संचार होने लगता है।

विशेष -

① प्रस्तुत गद्यांश में शुक्ल जी ने श्रद्धा भक्ति जैसे सूक्ष्म मनोविकार का विश्लेषण किया है, जो उनके निबंधों को वैज्ञानिक शैली प्रदान करता है।

② सूत्र भाषा शैली का प्रयोग शुक्ल जी की विशिष्टता है। वे इसी निबंध में अन्यत्र भी लिखते हैं -

"प्रेम में घनत्व अधिक है, श्रद्धा में विस्तार।

③ खड़ी बोली को जिस तत्समीपन से युक्त शुक्ल जी ने गद्य में किया है, छायावाद में वही तत्समीपन पद्य रूप में प्रस्तुत हुआ है।

④ छायावादी प्लेटोनिक प्रेम में प्रेमी को ~~प्रेम~~ प्रेम की भाँति माना जाना, इसी भाव की प्रगाढ़ता का परिणाम है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ख) तुम्हें पता था मैं भीग जाऊँगी। और मैं जानती थी तुम चिन्तित होगी। परन्तु माँ...
...मुझे भीगने का तनिक खेद नहीं। भीगती नहीं तो आज मैं वंचित रह जाती।
चारों ओर धुआँरे मेघ घिर आये थे। मैं जानती थी वर्षा होगी। फिर भी मैं घाटी की पगडंडी पर नीचे-नीचे उतरती गयी।
एक बार मेरा अंशुक भी हवा ने उड़ा दिया। फिर बूँदें पड़ने लगीं। वस्त्र बदल लूँ, फिर आकर तुम्हें बताती हूँ। वह बहुत अद्भुत अनुभव था माँ, बहुत अद्भुत।

संदर्भ - प्रस्तुत गद्य पंक्तियाँ ~~नवलेखन~~ नवलेखन दौर के साहित्यकार 'मोहन राकेश' के नाटक 'आषाढ़ का एक दिन' से ली गई है।

इन पंक्तियों में मल्लिका अपनी माँ अम्बिका से बात करती है।

व्याख्या - मल्लिका बारिश में भीग कर जब घर आती है, तो वह अपनी माँ से कहती है कि अगर वह आज नहीं भीगती तो कालिदास के सामीप्य से वंचित हो जाती। अपने प्रेम का वर्णन करते हुये वह पूर्वदीप्ति में चली जाती है।

विशेष -

① इन पंक्तियों में प्रकृति प्रेम के उद्दीपन विभाव की भांति प्रस्तुत हुई है। यह उद्दीपन जायसी के बारहमासा में मुखर रूप से व्यक्त

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

हुआ है।

② उक्त पंक्तियों के माध्यम से लेखक ने कालिदास के मूल व्यक्तित्व को भी प्रकट करना चाहा है किन्तु कालिदास इस व्यक्तित्व को दबाकर बाहर चला जाता है।

③ भाषा - तत्सम खड़ी बोली है।

④ इस नाटक पर अस्तित्ववादी दर्शन का प्रभाव है।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) और मनुष्य पशु नहीं है, क्योंकि उसे बातें बनाना आता है– अपनी मूर्खताओं को छिपाना, पापों पर बुद्धिमानी का आवरण चढ़ाना आता है! और वाग्जाल की फाँस उसके पास है। अपनी घोर आवश्यकताओं में कृत्रिमता बढ़ाकर, सभ्य और पशु से कुछ ऊँचा द्विपद मनुष्य, पशु बनने से बच जाता है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

संदर्भ - प्रस्तुत गद्यांश हिन्दी नाटक के शिखर जयशंकर प्रसाद के नाटक 'स्कन्दगुप्त' से लिया गया है।

इन पंक्तियों में मातृगुप्त मनुष्य द्वारा अपने पर डाले गये आवरणों को दर्शाता है।

व्याख्या - मातृगुप्त कहता है कि मनुष्य पशु की भाँति अपने मूल व्यक्तित्व को दर्शाने की बजाय उस पर आवरण डाल देता है तथा इसी आवरण से वह दूसरों को धोखा देने में सफल होता है। वह इस आवरण को डालकर बाहरी रूप में पशु बनने से बच जाता है अर्थात् बाहरी तौर पर वह अपना पशुत्व प्रकट नहीं करता।

विशेष -

① सभ्यता के विकास के साथ बढ़ती जा रही कृत्रिमता को प्रकट किया है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(2) ऐसी ही कृत्रिमता के संदर्भ में शुक्ल जी ने 'कविता क्या है' निबंध में अपने विचार प्रकट किये है तथा कहा है कि इस कृत्रिमता को केवल कविता ही हटा सकती है।

(3) प्रस्तुत गद्यांश की भाषा तत्समी खड़ी बोली है।

(4) गहरी व्यंग्यात्मकता का प्रयोग किया गया है।

प्रासंगिकता - उक्त पंक्तियाँ वर्तमान समाज में उपस्थित कृत्रिमता को दर्शाती है साथ ही संकेत देती है कि 'प्रकृति की ओर लौटो।'

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(घ) इस दुनिया में सबसे मेल-जोल रखकर चलना पड़ता है। नदी किनारे की घास पानी के साथ थोड़ा झुक लेती है और फिर उठ खड़ी होती है, लेकिन बड़े-बड़े पेड़ धार के सामने अड़ते हैं और टूट जाते हैं।

संदर्भ - प्रस्तुत गद्यांश 'नई कहानियों के प्रतिनिधि संकलन' एक दुनिया समानान्तर' की 'बदबू' कहानी से लिया गया है। इसके लेखक शेखर जोशी है।

प्रस्तुत पंक्तियाँ एक वृद्ध, नायक द्वारा विरोध किये जाने पर उसे समझाने के क्रम में कही।

व्याख्या - लेखक स्पष्ट करना चाहता है कि व्यक्ति को परिस्थितियों के अनुसार स्वयं को ढालना आना चाहिए, जैसे नदी के तट पर घास पानी आने पर झुक जाती है किन्तु पेड़ नहीं झुकने के कारण टूट जाते है।

किन्तु नायक शोषण की समस्या से पीड़ित है और झुकना नहीं चाहता।

विशेष -

① लेखक दर्शाना चाहता है कि शोषण की दीर्घकालिक किस तरह व्यक्ति को निष्क्रिय बना देती है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

② लेखक वृद्ध की क्रांति चेतना के बुझ जाने को संदर्भित कर रहा है।

③ चूंकि नई कहानियाँ के चरित्र परिस्थितियों के हाथों की कठपुतली होते है, यहाँ यह स्पष्ट हुआ है।

④ गद्यांश की भाषा खड़ी बोली है।

⑤ गहरी प्रतीकात्मकता तथा दार्शनिकता का बोध होता है।

<u>प्रासंगिकता</u> - उक्त पँक्तियाँ व्यक्ति को सहिष्णु बनाने के लिए प्रासंगिकता रखती है, क्योंकि जब तक वह दूसरों के विचारों को ग्रहण करने की क्षमता से युक्त नहीं होगा, तब तक संघर्ष चलता रहेगा। वर्तमान में धार्मिक उन्माद के कारण हो रही हिंसा इसी सहिष्णुता की कमी है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ड़) कविता केवल वस्तुओं के रूप-रंग में सौंदर्य की छटा नहीं दिखाती, प्रत्युत कर्म और मनोवृत्ति के भी अत्यंत मार्मिक दृश्य सामने रखती है। वह जिस प्रकार विकसित कमल, रमणी के मुखमंडल आदि के सौंदर्य मन में लाती है, उसी प्रकार उदाहरण, वीरता, त्याग, दया, प्रेमोत्कर्ष इत्यादि कर्मों और मनोवृत्तियों का सौंदर्य भी मन में जमाती है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

संदर्भ - प्रस्तुत गद्य पंक्तियाँ 'आचार्य शुक्ल के निबंध 'कविता क्या है' से ली गई है।

इन पंक्तियों में शुक्ल जी ने कविता का उद्देश्य बताया है।

व्याख्या - शुक्ल जी कहते है कि कविता केवल बाहरी सौंदर्य बोध प्रस्तुत नहीं करती बल्कि वह आंतरिक मार्मिकता का भी बोध कराती है। वह कमल की भाँति है, जो सौंदर्य के साथ वीरता, त्याग, दया जैसे मनोभावों से भी युक्त करती है।

विशेष

① 'कविता क्या है' निबंध में शुक्ल जी ने कविता को मानव सभ्यता की बाहरी परछाइयों को हटाने वाला बताया है।

② ऐसी ही पंक्तियाँ रंग-गुप्त में मातृगुप्त द्वारा कही गई है। जहाँ वह कहता है कि

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

"कवित्व वर्णमय चित्र है।"

③ गुप्त जी ने भी कविता के संदर्भ में लिखा है-

"केवल मनोरंजन ही नहीं कवि का कर्म होना चाहिए।"

④ प्रस्तुत गद्यांश की भाषा खड़ी बोली है, जो तत्समीपन से युक्त है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

6. (क) शहरी जीवन के चित्रण में अधिक सफलता न मिलने के बावजूद प्रेमचंद द्वारा गोदान में शहरी कथा के समावेश के क्या कारण हो सकते हैं? युक्तियुक्त उत्तर लिखिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

गोदान मूलतः ग्रामीण परिवेश तथा उसमें शोषित होरी किसान की कहानी है किन्तु प्रेमचन्द ने इसमें तत्कालीन शहरी जीवन को भी उकेरने का प्रयास किया है।

वस्तुतः शहरी जीवन को प्रेमचन्द उसी सूक्ष्मता के साथ प्रस्तुत नहीं कर पाये है, जितनी सूक्ष्मता से उन्होंने ग्रामीण जीवन को उभारा है। इस संदर्भ में कई समीक्षकों ने इनकी आलोचना भी की है।

किन्तु प्रेमचन्द ने ग्रामीण तथा शहरी जीवन के प्रस्तुतीकरण में जो अन्तर रखा वह उनकी श्रेष्ठता को दर्शाता है न कि उनकी ~~कमी~~ कमी को। वस्तुतः तत्कालीन समय में नवीन शहरीकरण की प्रवृत्ति थी, जिसके कारण प्रेमचन्द ने बेहद कम रूप में इसे अंकित किया है।

गोदान में शहरी जीवन की उपस्थिति

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

के कारण निम्नलिखित है -

प्रेमचन्द किसानों के शोषण का सम्पूर्ण चक्र दर्शाना चाहते थे। इस कारण वे केवल ग्रामीण परिवेश तक ही नहीं रुकते बल्कि शहरी शोषक चरित्रों को भी उभारते हैं

(2) शहर में मजदूरों के शोषण के माध्यम से वे दिखाना चाहते थे कि गाँव में किसान बनकर शोषित होने वाले, शहर में मजदूर बनकर शोषित हैं।

(3) 1936 का समय भारतीय इतिहास में तीव्र संक्रमणकालीन है। इस समय सामन्ती संरचना टूट रही थी तथा पूँजीवादी संरचना उभर रही थी। इसी संदर्भ में प्रेमचन्द 'मेहनत की दुनिया' तथा 'मुनाफे की दुनिया' के मध्य उपस्थित भेद को दर्शाना चाह रहे थे। भोला कहता है -

" कौन कहता है, हम तुम इंसान हैं, xxx

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

इस बैल है और जुतने के लिए पैदा हुये है।"

वहीं दूसरी ओर एक वर्ग कुछ ही वर्षों में अरबपति बन जाता है।

(4) प्रेमचन्द स्वतंत्रता आन्दोलन का शहरी परिदृश्य दर्शाना चाहते थे। क्योंकि जो लोग स्वतंत्रता आन्दोलन में भाग लेते थे वे केवल जेल जाकर राजनीतिक रोटियाँ सेंकते थे। प्रेमचन्द लिखते है-

"मिस्टर खन्ना दो बार जेल जा चुके थे, किसी से नहीं डरते थे, खद्दर नहीं पहनते थे, फ्रांस की शराब पीते थे।"

(5) प्रेमचन्द तत्कालीन नारी चेतना को भी अपने साहित्य का हिस्सा बनाना चाहते थे। इसलिए उन्होंने ~~मेहता~~ शहरी जीवन को चुना।

इस प्रकार कहा जा सकता है कि भले ही प्रेमचन्द ने शहरी जीवन का बेहद कम अंकन किया हो, वह उनकी असफलता

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

नहीं बल्कि शिल्पमात्र शोषता है, इसके माध्यम से वे दोहरे शोषण चक्र, दोहरे व्यक्तित्व को उभारने में सफल रहे।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) नई कहानी की विशेषताओं के आलोक में कमलेश्वर की कहानी 'खोई हुई दिशाएँ' का विवेचन कीजिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

स्वतंत्रता के पश्चात, उत्पन्न मोह भंग तथा शहरी जीवन की समस्याओं को केन्द्र में रखकर भोगे हुये यथार्थ को प्रस्तुत करते हुये नई कहानी आन्दोलन प्रारंभ हुआ।

कमलेश्वर ने 'खोई हुई दिशाएं' कहानी में नई कहानी की इन्हीं विशेषताओं को प्रस्तुत किया है।

'खोई हुई दिशाएं' की मूल समस्या पहचान का संकट है। a शहरी जीवन में व्यक्ति के समक्ष यह समस्या उत्पन्न होती है कि कोई उसे नहीं पहचानता। यन्दर सोचता है -

"सैकड़ो लोग गुजरते है पर उसे कोई नहीं पहचानता *** तभी उसके मन में अपने शहर की छवि आती है, जहाँ गंगा किनारे टहलते हुये कोई जानपहचान का मिलने पर मुस्कुराहट तैर जाती।"

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

'खोई हुई दिशाएँ' की एक अन्य समस्या अजनबीपन एवं आत्मनिर्वासन है। शहरी जीवन की यांत्रिकता में व्यक्ति अपने स्वयं के व्यक्तित्व से कट जाता है। चन्दर सोचता है -

"कितना लंबा अरसा हो गया, वह स्वयं से नहीं मिल पाया।"

इस कहानी में एक बड़ी समस्या रिश्तों की बनावटीपन की है। चन्दर का दोस्त जिस तरह का व्यवहार करता है तथा रिश्तेदारों द्वारा जैसा व्यवहार किया जाता है। उससे चन्दर सोचता है कि यहाँ सब कैसे से कैसे मतलब रखते हैं।

अस्तित्ववादी दर्शन की झलक भी इस कहानी में उपस्थित है, जब चन्दर निरर्थकता बोध से ग्रसित हो जाता है तथा शहरी जीवन की यंत्रणा को झेलने

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

को मजबूर होता है।

सारांशतः कहा जा सकता है कि खोई हुई दिशाएं नई कहानी की प्रतिनिधि कहानियों में सम्मिलित है, जो भोगे हुये यथार्थ को प्रस्तुत करती है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) 'यही सच है' कहानी की शिल्प-योजना पर प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

'यही सच है' कहानी मन्नू भंडारी की प्रेम संबंधों के संदर्भ में लिखी गई कहानी है, जिसमें उन्होंने स्पष्ट किया है कि संबंध किसी भी गहरे हो विश्वसनीय नहीं होते।

इस कहानी की भाषा बेहद प्रतीकात्मकता से युक्त है, जिसमें लेखिका प्रतीकों के माध्यम से निराशा तथा संजय के प्रेम की गहराई को दर्शाती है।

शैली के रूप में लेखिका ने पूर्वदीप्ति शैली तथा डायरी शैली का समावेश किया है। लेखिका पूर्वदीप्ति में जाकर घटनाओं को याद करती है तथा उन्हें वर्तमान में जीने का प्रयास करती है।

मन्नू भंडारी ने 'यही सच है' कहानी में नई कहानी के सभी परिभाषाओं को स्थापित करने का प्रयास किया है, जिसके

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

कारन कथानक में आदि, उत्कर्ष तथा अन्त जैसी रसमयता नहीं दिखाई देती, बल्कि बिखराव उपस्थित है।

कथानक में उपस्थित यही बिखराव कहानी में नाटकीयता भी लाता है, जिसमें लेखिका ने दो विरोधाभासी स्थितियों को एक साथ प्रकट करने का प्रयास किया है।

सारांशतः कहा जा सकता है कि 'यही सच है' शिल्प के स्तर पर एक परिपक्व कहानी है।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

8. (क) ''गोदान' भारतीय किसान के पूरे जीवन-संघर्ष और इसमें उसके पराभव की करुण गाथा है।' इस कथन के संदर्भ में 'गोदान' का विवेचन कीजिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

गोदान प्रेमचन्द का चरम यथार्थवाद को प्रस्तुत करता उपन्यास है जिसमें एक किसान का सम्पूर्ण जीवन संघर्ष प्रस्तुत हुआ है।

गोदान में प्रेमचन्द उपन्यास की शुरुआत में एक किसान के जीवन की इच्छा बताते है-

"एक साधारण गृहस्थी की भाँति होरी के मन में भी एक गाय की लालसा संचित थी।"

होरी की यह इच्छा सम्पूर्ण उपन्यास की समाप्ति पर भी पूरी नहीं होती बल्कि समाज की मान्यताएँ एवं रूढ़िवादिता मृत्यु के पश्चात भी उसका पीछा नहीं छोड़ती और गोदान की मांग करती है।

इसके अतिरिक्त किसान का जीवन संघर्ष गोदान के हर पृष्ठ पर दिखाई देता है। होरी जैसा अदम्य जिजीविषा से युक्त किसान भी अन्त में पराजय बोध से भर उठता है।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

"होरी की दशा दिन-दिन गिरती जा रही थी, जीवन संघर्ष में सदैव उसकी हार हुई थी, ××× पर अब उसे सुधी आशा की हरियाली भी नहीं रही।"

यह शोषण तंत्र इतना मजबूत है कि उसकी उपज को 'ऋण' के माध्यम से ले लिया जाता है। उसकी निरक्षरता का फायदा उठाकर उधार की रकम पर मनमाना ब्याज वसूला जाता है।

किसान की दशा केवल सामन्तवादी संरचना के कारण ही ऐसी नहीं थी बल्कि सरकारी कर्मचारी भी उसका शोषण करते है। प्रेमचन्द ने लिखा है -

"यहाँ जो किसान है, वह सबका नरम चारा है। पटवारी को दस्तूरी और नजराना न दे तो निबाह न हो ××× थानेदार तो जैसे उसके मेहमान है।"

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

किसान का शोषण केवल गाँवों में होता है, यह भी नहीं है क्योंकि गाँव के शोषण से दूर भागकर गये मजदूर शहरी जीवन में भी उसी शोषण से पीड़ित है। मिल में हड़ताल के बावजूद बेरोजगारों द्वारा कम वेतन पर कार्य करना उसका उदाहरण है।

वस्तुत: गोदान में प्रेमचन्द ने स्पष्ट रूप से यह बताने का प्रयास किया है कि किसानों की यह दशा उत्पादन की समस्या नहीं है बल्कि असमान वितरण की समस्या है। एक ऐसा वर्ग है, जो किसानों की उपज हड़पने को तैयार रहता है, जिससे किसान दुर्दशापूर्ण स्थिति में रहने को मजबूर है।

किसान के जीवन में कभी-कभी आने वाली खुशियाँ भी इस सामन्ती शोषण के कारण क्षणिक होती है। होरी जैसे ही ऋण से मुक्त होने की सोचता है, यह ऋण

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

दुश्चक्र उसे छोड़ने की बजाय बढ़ता ही जाता है।

सारांशतः कहा जा सकता है कि गोदान में वर्णित किसान संघर्ष एवं पराभव न केवल तत्कालीन समाज की स्थिति है, बल्कि यह वर्तमान संदर्भ में भी उतना ही अधिक प्रासंगिक है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) 'धर्मवीर भारती की कहानी 'गुलकी बन्नो' भारतीय समाज में नारी की दयनीय स्थिति का यथार्थपूर्ण और तल्ख चित्रण करती है।' विवेचन कीजिये। 15

कृपया इस स्थान कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

'गुलकी बन्नो' धर्मवीर भारती द्वारा भारतीय समाज में नारी के शोषण को यथार्थ रूप में प्रकट करने वाली कहानी है।

इस कहानी में ~~प्रेमचन्द~~ भारती ने सामाजिक शोषण को प्रस्तुत करते हुये 'गुलकी बन्नो' के पति द्वारा उसके प्रति की जाने वाली घरेलु हिंसा को दर्शाया है।

इस हिंसा के कारण वह विकलांग हो गई है तथा पीठ में कूबड़ निकल आया है, इस कारण पति ने उसे त्याग दिया है।

भारतीय समाज में जिस स्त्री को जन्म से ही बोझ माना जाता है, वहाँ 'गुलकी बन्नो' जैसी हजारों स्त्रियाँ इसी तरह का जीवन जीने को अभिशप्त है।

पति से दूर रहकर भी वह स्वतंत्र जीवन नहीं जी पाती बल्कि उसकी समस्याएँ

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

दृष्टि The Vision
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

और अधिक बढ़ जाती है।

उसकी संरक्षक भी उसे यातनाएँ देती है तथा उसकी सम्पत्ति पर अधिकार कर लेती है। इस कारण वह मायके में भी सीमित होती है।

भारती दिखाना चाहते है कि किस तरह नारी एक वस्तु की भांति समझी जाती है, जिसे पति जब चाहे त्याग सकता है, तथा जब चाहे वापस बुला सकता है।

'गुलकी बन्नो' के पति ने उससे तलाक लिए बिना दूसरा विवाह कर लिया है तथा सामाजिक व्यवस्था इसे स्वीकार भी करती है।

जब पति गुलकी बन्नो को घर की नौकरानी बनाकर ले जाना स्वीकार करता है, तब उसे मजबूरी में उसी अभिशप्त जीवन को जीने के लिए धकेल दिया जाता है।

इस प्रकार भारती ने जिस नारी

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

समस्या का चित्रण किया है वह भारतीय समाज का नंगा यथार्थ है, जो वर्तमान संदर्भ में भी कुछ हद तक प्रासंगिक है।

कृपया इस स्थान कुछ न लिखें।
(Please don't wri anything in this

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) ''बूढ़ी काकी' कहानी वृद्धावस्था का मार्मिक अंकन करती है।' इस कथन के परिप्रेक्ष्य में 'बूढ़ी काकी' कहानी की संवेदना पर प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

अच्छा लेखक वह होता है, जो स्वघटित यथार्थ को प्रस्तुत करे किन्तु श्रेष्ठ लेखक वह है। जो परघटित यथार्थ को उसी मार्मिकता के साथ अंकित करे। प्रेमचन्द ऐसे ही सूझबूझ लेखक है।

'बूढ़ीकाकी' कहानी में प्रेमचन्द ने एक वृद्ध महिला की कठिन जीवन स्थिति को उभारा है, जिसके सम्पत्ति पर नियंत्रण करने के बाद भी उसके परिजन उसका जीवन निर्विघ्न सुविधापूर्ण रूप में नहीं होने देते है।

प्रेमचन्द ने स्पष्ट करते हुये लिखा है कि वृद्धावस्था में भूख संबंधी समस्या से जूझती हुई बूढ़ी काकी जूठे पत्तल को खाने को अभिशप्त है। चूंकि बूढ़ी काकी से भूख बर्दाश्त नहीं होती है, इसलिए वह बार-बार खाने की जिद करती है, तब उसके साथ अशुभ व्यवहार होता है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

बूढ़ी काकी के साथ हुई घटना किसी भी वृद्ध के आत्म सम्मान को चोट पहुंचा सकती है कि वृद्धावस्था में जूझती बूढ़ी काकी इस अपमान को भी भुला देती है।

'बूढ़ी काकी' द्वारा झेली जा रही यह समस्या भीष्म साहनी ने भी अपनी कहानी 'चीफ की दावत' में प्रकट की है। जिसमें वृद्धा के साथ अजनबी की भाँति व्यवहार होता है, वही स्थिति बूढ़ी काकी के साथ भी है।

प्रेमचन्द ने वृद्धावस्था की मार्मिक अभिव्यक्ति के साथ बाल संवेदना को भी कहानी में जगह दी है, कि किस प्रकार ~~अ~~ लाडली बूढ़ी काकी को खाना पहुँचाती है।

इस प्रकार सारांशतः कहा जा सकता है कि बूढ़ी काकी में प्रेमचन्द ने तत्कालीन समाज में व्याप्त वृद्ध समस्याओं को उजागर

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

करते हुये उनके प्रति संवेदना व्यक्त की है। साथ ही यह भी कहा जा सकता है कि बूढ़ी काकी कहानी वर्तमान दौर में भी उसी प्रासंगिकता के साथ उपस्थित है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation